बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण

द्वितीय तल, पन्त भवन, बेली रोड, पटना
website-www.bsdma.org

बिहार सरकार

बाँस का घर आपदारोधी कैसे बने ?

सरल आयताकार रूपरेखा वाले घर बनाऐं।
द्वारो एवं खिड़कियों के आकार सीमित रखें।

चार तरफ ढ़ालवाले छत तूफानरोधी हैं और दीवारों को वर्षा से बचाते हैं

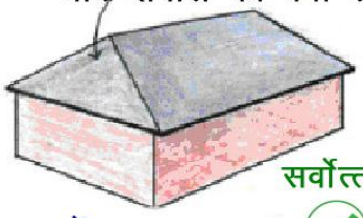

चारों तरफ ढ़ाल — सर्वोत्तम

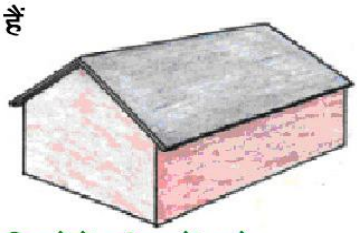

तिकोनें दीवारों को छत के साथ बाँधें
दो तरफ ढ़ाल

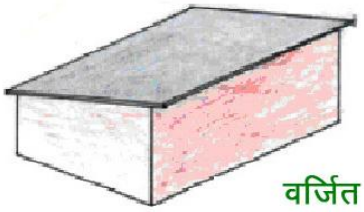

एक तरफ ढ़ाल — वर्जित

चारों तरफ ढालवाले छत बनाऐं। ढालवॉ छत के नीचे मचान बना सकते हैं।

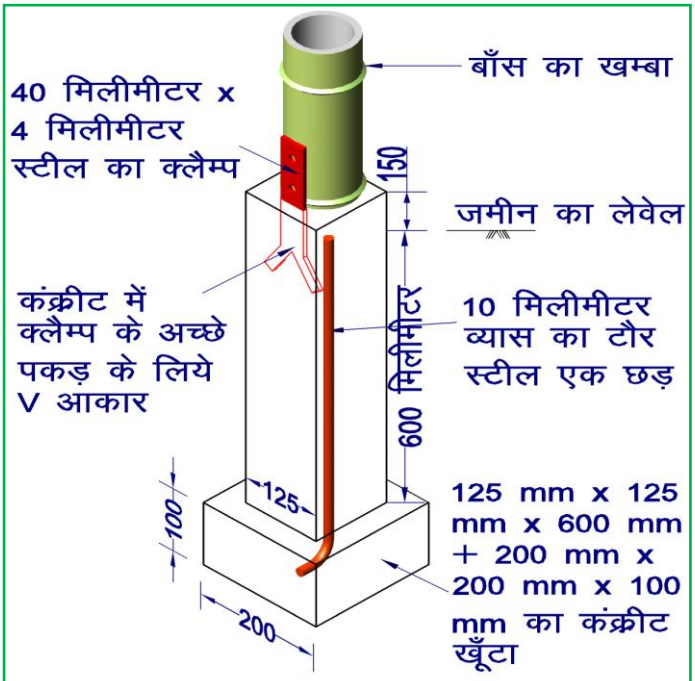

बाँस के खम्बे के आधार के लिये जमीन के अंदर कंक्रीट खूँटे का उपयोग

हरौत बाँस के खम्बे 1.5 मीटर से 1.8 मीटर दूरी पर लगायें। बाँस के खम्बे को जमीन में मत गाड़ें, सड़ जाएगा। बाँस के खम्बे को कंक्रीट खूँटा के उपर रखकर खूँटा के साथ जकड दें।

चार घंटे के अंदर कटे बाँसों के जड़ वाले सिरे पर पम्प से दवाव डालकर रासायनिक परिरक्षण

कीड़ों से बचाव हेतु बाँसों एवं बत्ती का रासायनिक उपचार करें।

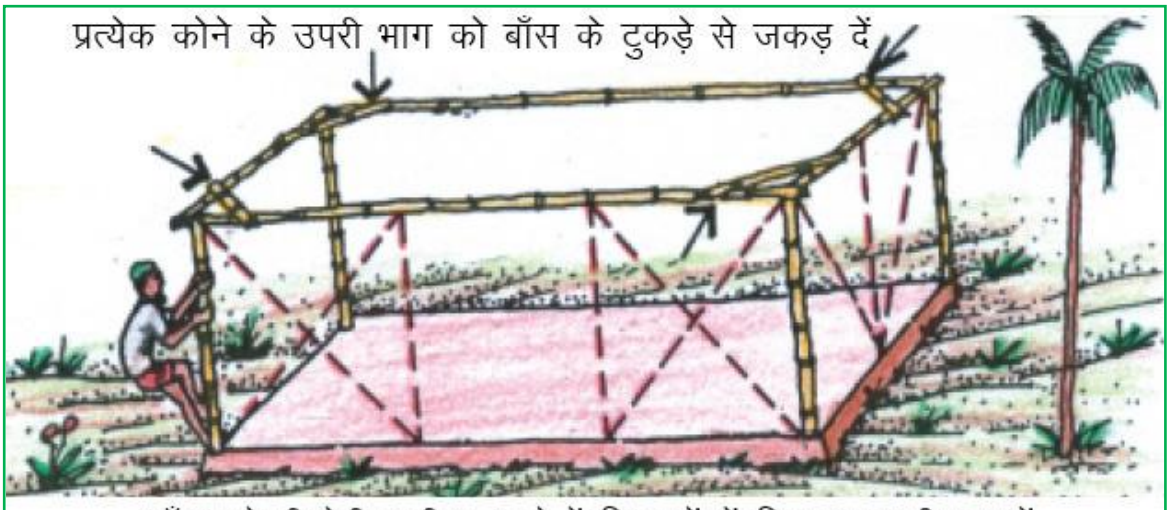

बाँस को बीचोबीच चीरकर दोनों दिशाओं में तिरछा बन्धनी लगाऐं

बाँस के संरचना ढाँचे के स्थायित्व के लिये दीवार फलकों में खम्बों के साथ तिरछा बन्धनी का उपयोग

बाँस के खम्बों के बीच तिरछा बन्धनी लगाऐं।
बाँसों को नायलन टेप अथवा GI तार से बाँधें।

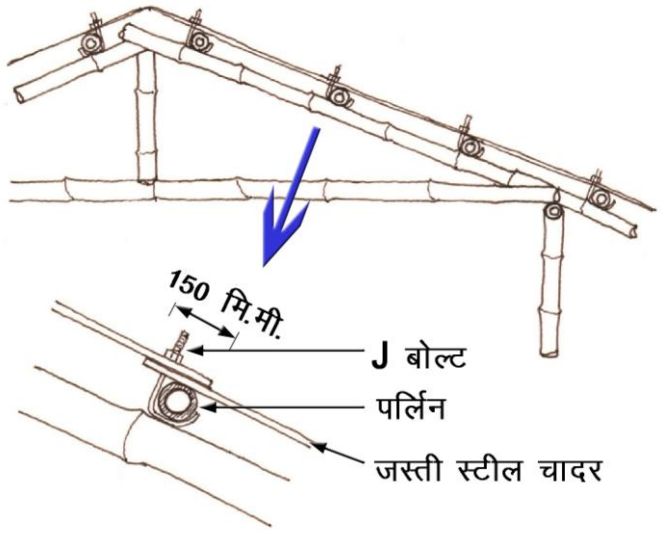

J बोल्ट के सहारे, पर्लिन के साथ, जस्ती स्टील चादर को जकड़ देने का विवरण

शीट को जकड़ने के लिये मरोड़वाले कील या J बोल्ट का उपयोग

छत के GI चादर को अलकतरा वाशर के साथ J जे बोल्ट से जकड़ दें।

घर की चोटी एवं कोनों के आस–पास नियमित जाँच करें।

प्रस्तुतिः– पद्मश्री, डा. आनन्द स्वरूप आर्य, अवकाशप्राप्त प्राध्यापक, आई. आई. टी. रूड़की, सदस्य, बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण।

बरूण कान्त मिश्र, कार्यपालक अभियंता, पथ निर्माण विभाग, सह माननीय सदस्य, डा. आर्य के आप्त सचिव।

मार्च 2013